इस अनुच्छेद में लेखक ने उल्लेख किया है कि कोई अपने रूप के सौंदर्य से लोगों को आकर्षित करता है, कोई अपने धन से बहुत कुछ प्राप्त कर लेता है और कोई अपने गुणों के कारण संपत्ति या यश अर्जित करता है। लेकिन मदर इन सबसे अलग–विलक्षण हैं। मदर, मानवता के प्रति अपने समर्पण-भाव के कारण अपने प्रति आदर और श्रद्धा अर्जित करती हैं। जो पीड़ित और कष्ट में होते हैं, जिन्हें कहीं सहारा नहीं; लेकिन जिन्हें सहारे की सबसे अधिक ज़रूरत होती है, वे मदर को प्राप्त करते हैं और मदर का त्याग-बलिदान भी उन्हीं के लिए सुरक्षित है। अर्थात् जिनके पास न रूप है, न धन, न गुण वे भी कुछ पा सकते हैं, लेकिन उन्हें कुछ दे सकने वाले केवल मदर जैसे लोग होते हैं। अब आपको मदर का यह कथन समझ में आ गया होगा कि, ''न, कल उसके लिए (बिनती) करूँगी, जिसे सबसे अधिक कष्ट होगा।''

मदर के स्वभाव की कठोरता का भी उल्लेख लेखक ने किया है, लेकिन इसे पढ़कर आप यह समझ गए होंगे, कि यह कठोरता सकारात्मक है, इससे अधिक-से-अधिक लोगों का और ज्यादा कष्ट से ग्रस्त लोगों का भला होता है। लेखक ने मदर के स्वर की तुलना मिसरी के कूजे से की है। मिसरी का कूजा बड़ा और कठोर होता है, मीठा होते हुए भी। मदर भी जानती हैं कि सेवा की ज़रूरत किसे अधिक है, अन्य के प्रति उन्हें थोड़ा कठोर होना ही पड़ता है, पर यह कठोरता किसी के लिए मीठी साबित होती है।

पाठगत प्रश्न-5.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मदर टेरेसा का जीवन-उद्देश्य था—

   (क) ईसाई-धर्म का प्रचार करना।

   (ख) महिलाओं को जागरूक बनाना।

   (ग) भारत की संस्कृति को समझना।

   (घ) रोगियों व ज़रूरतमंदों की सेवा करना।

2. हिटलर के लिए उपयुक्त विशेषणों का समूह है—

   (क) वीर, विजेता, शासक

   (ख) संवेदनशील, सहृदय, शासनाध्यक्ष

   (ग) क्रूर, निरंकुश, तानाशाह

   (घ) निर्दय, साहसी, अधिनायक

टिप्पणी

3. लेखक ने सबसे अधिक महत्त्व किसे दिया है?

(क) रोगों को दूर करने को ☐ (ख) भावुकतापूर्ण आचरण को ☐

(ग) कठोरतापूर्ण व्यवहार को ☐ (घ) मानवता के प्रति समर्पण को ☐

5.2.3 अंश-3

ऊपर के बरामदे में...जीवन में ले कृतार्थ हुई।

पाठ के अंतिम अंश में मानव-कल्याण में लगी एक और मदर मार्गरेट का चित्रण किया गया है। मदर मार्गरेट बुजुर्ग हैं, लेकिन उनका अचूक प्रभाव छोड़नेवाला जादुई व्यवहार, उनकी चुस्ती-फुर्ती और हँसी का लेखक द्वारा वर्णन अत्यंत पठनीय है। इस अंश के अंत में क्रिस्ट हैल्ड के तबादले का भी उल्लेख है।

आपने जादूगर के करतब तो अवश्य देखे होंगे। पलभर में वह कुछ भी करके दिखा सकता है। एक चीज़ को दूसरी चीज़ में बदल सकता है। यह सब तो हमारे भ्रम के कारण होता है। मदर मार्गरेट भी जादू करती है, पर उनका जादू सच्चा है। लेखक रॉबर्ट नर्सिंग होम में एक ऐसी महिला मदर मार्गरेट से मिला, जो अपने व्यवहार व सेवा से रोगियों को पलभर में ठीक कर देतीं। इतनी बूढ़ी होने के बाद भी उनमें गज़ब की फुर्ती थी। मार्गरेट के जादू से कष्ट के कारण तड़पता रोगी पलभर में भला-चंगा हो जाता।

इसीलिए लेखक ने उन्हें जादू की पुड़िया कहा है। आपने कामरूप के जादू की कहानियाँ सुनी होंगी। कामरूप असम में है। वहाँ के बारे में कहानियाँ प्रचलित थीं कि जो वहाँ बाहर से जाता था, उसे मक्खी, कुत्ता-बिल्ली आदि बनाकर छोड़ दिया जाता था। ऐसा जादू किस काम का? लेखक के अनुसार जादू तो मदर मार्गरेट करतीं हैं जो अनुकरण करने लायक है। मदर का जादू मक्खियों जैसा जीवन बिताने वाले लोगों को वास्तविक मनुष्य बनाने का जादू है। जानते हैं मक्खियों जैसा जीवन बिताने का आशय क्या है? इसका आशय है— बीमारी से ग्रस्त दयनीय जीवन। ऐसे ही लोगों की सेवा करके, उन्हें मनुष्य बनाने का काम मदर मार्गरेट कर रही हैं। रॉबर्ट नर्सिंग होम को लेखक ने 'जादू-होम' कहा है, क्योंकि यहाँ मदर टेरेसा हैं, क्रिस हैल्ड हैं और मदर मार्गरेट हैं, जो रोगियों की सेवा करके, उनका जीवन सुधार रही हैं।

पाठ में आगे यह पता चलता है कि इसी अस्पताल में एक अमीर रोगी आया जिसने कभी कोई दुख नहीं सहा था। वह बहुत तड़प रहा था। यहाँ पर लेखक ने थोड़ा व्यंग्य किया है। यह व्यंग्य ऐसे अमीरों पर है जो अपने छोटे से कष्ट को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देखते दिखाते हैं दूसरों के भयानक कष्ट उन्हें नहीं दिखाई देते। वैसे दुख कभी यह देखकर नहीं आता कि कौन कितना सह सकता है? अगर ऐसा होता तो छोटे मासूम बच्चे और कमज़ोर तथा वृद्ध कभी दुखी ही नहीं होते। मार्गरेट ने उसे समझाया कि अभी कष्ट है, फिर धीरे-धीरे कम हो जाएगा और थोड़े दिनों में बिल्कुल खत्म हो जाएगा। दुख या कष्ट अगर आया है तो थोड़ा-बहुत तो उसे सहना ही पड़ता है। हमें भी चोट लगती है तो हम उसका उपचार करते हैं और थोड़े दिनों में ठीक हो जाती है। सुख-दुख तो आते-जाते रहते हैं, हमें कष्ट के कारण निराश नहीं होना चाहिए। यहाँ पर एक आशय और भी है। आज सब कुछ है, कल थोड़ा कम है और फिर सबकुछ समाप्त। यही जीवन की नियति है, फिर छोटे-मोटे कष्टों से क्यों घबराना, हँसकर उनका सामना करना चाहिए।

अच्छा! यह सोचें कि आपके जीवन का लक्ष्य क्या है? अगर अभी तक इस पर विचार नहीं किया तो अब करें, क्योंकि हमें अपने जीवन को किस दिशा में आगे बढ़ाना है, यह तो पता होना ही चाहिए। इससे कर्म के प्रति उत्साह हमेशा बना रहता है। मार्गरेट भी इतनी बूढ़ी होने के बावजूद हमेशा खुश व उत्साही रहती थीं। आखिर उनमें कौन-सी ऐसी जोत यानी ज्योति थी जो उन्हें इतनी शक्ति व खुशी प्रदान करती थी। वह जोत थी—मानव—सेवा की।

लेखक को जब यह पता चला कि क्रिस्ट हैल्ड का तबादला धानी के भील सेवा-केंद्र पर हो गया, तो वह दुखी हो गया। लेकिन लेखक की इस चिंता से अनजान क्रिस्ट नई जगह जाने को लेकर बहुत उत्साहित थीं। इस दुख का एक कारण यह था कि धानी का जीवन कठिन है और क्रिस हैल्ड का शरीर नाजुक। इसीलिए लेखक ने कहा कि— ''ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका?'' अर्थात् उन कठिन परिस्थितियों में यह क्रिस्ट हैल्ड कैसे रह पाएगी। वहाँ जाकर लोगों की सेवा करने का उनमें जोश था। वस्तुतः सुविधाओं से विहीन ऐसी ही जगहों पर काम करने की ज़्यादा आवश्यकता है। इस बात को क्रिस्ट समझती हैं। आपको अगर किसी ऐसी जगह से जाने के लिए कहा जाए, जहाँ आप कई वर्षों से रह रहे हैं तो शायद आपको भी अच्छा न लगे। लेकिन जब आपको पता चले कि आपके कार्य का बहुत महत्व होगा तो आप बहुत खुश होंगे। क्रिस्ट के लिए सारी जगहें एक-सी थीं और वे हर जगह केवल मानव-सेवा करना चाहती थीं। अपने इस महान कार्य को करने के मार्ग में वह किसी स्थान को बाधा नहीं बनने देती थीं। हमारे जीवन में रोज़ नई चुनौतियाँ आती हैं, उन्हें स्वीकार करना चाहिए। सेवा-भाव को आधार बनाकर पूरा जीवन बिता देने की कला को लेखक ने वहाँ सीखा। शायद आप भी निःस्वार्थ भाव से सबके लिए स्वयं को समर्पित करने के महत्व को समझ पाएँगे।

आप बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें सुनते हैं। हमारे अनेक धार्मिक ग्रन्थ भी हमें खूब नीति की बातें समझाते हैं। 'गीता' में कर्म को बहुत महत्त्व दिया गया है, हम ये बात जानते

हैं, परंतु इस पर अमल नहीं करते। नित्य गीता पाठ करना या गीता की चर्चा करना ही उसे कंठ में रखना है। हम भारतीयों को इस बात पर गर्व भी है कि गीता एक भारतीय ग्रंथ है। पर जहाँ उसके अनुसार आचरण करने का प्रश्न है, वहाँ हम पिछड़ जाते हैं। लेकिन क्रिस्ट हेल्ड सच्चे अर्थों में गीता के अनुसार आचरण कर रही थीं। सारी अच्छी बातें हम सिर्फ सुनते हैं, जीवन में उतारते नहीं हैं। क्रिस्ट ने सही अर्थों में कर्म के ज्ञान को अपने जीवन में उतारा। जीवन में कर्म के सौंदर्य का सर्वाधिक महत्त्व है। यह बात आप एक अन्य पाठ 'सुखी राजकुमार' के माध्यम से भी जानेंगे। राबर्ट नर्सिंग होम में सेवा-भाव का जो रूप दिखा, उसमें जीवन जीने की कला का रहस्य छिपा था। यह सब देखकर लेखक आश्चर्यचकित था। उम्मीद है कि पाठ को पढ़कर आपको भी मानव-सेवा की प्रेरणा प्राप्त हुई होगी।

क्रियाकलाप-5.2

लेखक ने ज़रूरतमंद लोगों की सेवा में निस्वार्थ-भाव से लगी महिलाओं का आँखों देखा प्रभावशाली चित्रण किया है। आपके जीवन में भी कोई ऐसी घटना घटी होगी जिसे आप आज तक भूल नहीं पाए। ऐसी ही किसी घटना का आँखों देखा चित्रात्मक वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

5.2.4 भाषा-शैली

'रॉबर्ट नर्सिंग होम' एक ऐसा पाठ है जिसमें संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज़ आदि विधाओं का संयोग हुआ है। इन विधाओं में विशिष्ट प्रकार की भाषा, शैलियों का प्रयोग होता है। इस पाठ में भी इन भाषा-शैलियों को देखा जा सकता है। कहीं पर ऐसा लगता है मानो लेखक आँखों देखा वर्णन कर रहा है, कहीं वह शब्दों के माध्यम से व्यक्ति चित्र बनाता है और कहीं भावुक होकर भाषा का व्यवहार करता है।

पाठ के आरंभ में ही आप देखते हैं कि आँखों देखा हाल सुनाया जा रहा है। उदाहरण देखिए:

"यह है सितंबर, 1951!

रोग का आघात पूरे वेग में, परिणाम कँपकँपाता और वातावरण चिंता से घिरा-घिरा कि हम सब सुस्त। तभी मैंने चौंककर देखा कि अपने विशिष्ट धवल वेष में आच्छादित नारी कमरे में आ गई है।''

मदर टेरेसा के साथ क्रिस्ट हैल्ड आती हैं तो उनका भी ऐसा ही वर्णन किया गया है। कभी-कभी आँखों देखी घटना के वर्णन को प्रभावशाली बनाने के लिए छोटे-छोटे ब्यौरे भी दिए जाते हैं। ऐसे ही ब्यौरे इस पाठ में भी आए हैं। उन स्थलों पर पाठ बहुत प्रभावशाली हो गया है, जहाँ इन ब्यौरों के माध्यम से मदर टेरेसा, क्रिस्ट हैल्ड और मदर मार्गरेट के व्यक्ति-चित्र खींचे गए हैं।

कहीं—कहीं लेखक इन तीनों पात्रों की मानव-सेवा से इतना प्रभावित हुआ है कि वह भावुकतापूर्ण अभिव्यक्तियाँ करता है। एक अभिव्यक्ति देखिए—

''हाँ, माँ ही थीं: होम की अध्यक्षा मदर टेरेसा, मातृभूमि जिनकी फ्रांस और कर्मभूमि भारत! उभरती तरुणाई से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में तल्लीन; यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव और बस यही, यही।''

एक अन्य स्थल पर लेखक कहता है—

''फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।''

इन सेवारत महिलाओं का लेखक के आंतरिक मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। उस प्रभाव को व्यक्त करने के प्रयास में कुछ अभिव्यक्तियाँ जटिल या लीक से हटकर हो गई हैं। इस पाठ में अधिक बात को बहुत कम शब्दों में कहने का कौशल जगह-जगह मिलता है, जैसे—

''साफ-सुथरी भाषा, उच्चारण साफ़ और स्वर आदेश का; पर आदेश न अधिनायक का, न अधिकारी का, पूर्णतया माँ का, जिसका आरंभ होता है शिकंजे से और अंत गोद में।''

पाठ में अनेक स्थलों पर लाक्षणिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो लेखक के आशय को पाठक तक पहुँचाने में बहुत सहायक हैं। उदाहरण देखिए—

- चाँदनी-चर्चित हाथ।
- हँसी बिखेरना।
- चाँदनी को दूध में घोलकर ब्रह्मा ने उसका निर्माण किया हो।
- हज़ार वाट का बल्ब मेरी आँखों में चौंध गया।
- हँसी उनकी यों कि मोतियों की बोरी खुल पड़ी।
- ओह, उस जंगली जीवन में यह कर्पूरिका।

लेखक ने अवसरानुकूल तत्सम, तद्भव, देशज और आगत शब्दों का उपयोग किया है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-5.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. ''पर कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?— कहने का आशय है—

   (क) अमीर लोगों पर कष्ट नहीं आना चाहिए। ☐

   (ख) सहने की क्षमता के अनुसार कष्ट आना चाहिए। ☐

   (ग) कष्ट किसी भी व्यक्ति पर आ सकता है ☐

   (घ) प्रत्येक व्यक्ति को कष्ट झेलना चाहिए। ☐

2. चीखते-तड़पते रोगी को मदर मार्गरेट ने 'कुछ नहीं, कुछ नहीं' कहा क्योंकि वे—

   (क) उसके रोग को मामूली समझती थीं। ☐ (ख) डॉक्टर पर विश्वास करती थीं। ☐

   (ग) रोग से लड़ने की हिम्मत देना चाहती थीं। ☐ (घ) रोग का सही उपचार जानती थीं। ☐

3. पाठ की भाषा-शैली में कौन-सी विशेषता नहीं मिलती?

   (क) आँखों देखा वर्णन ☐ (ख) छोटी-छोटी बातों की व्याख्या ☐

   (ग) भावुकतापूर्ण उद्‍गार ☐ (घ) चित्रात्मकता ☐

आपने क्या सीखा

- सुखी मानवता के लिए महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय है। इन महिलाओं ने देश, भाषा, धर्म, संप्रदाय आदि की दीवारों को ढहा दिया।
- अपने मानवीय व्यवहार व आचरण से हम किसी को भी अपना बना सकते हैं।
- मनुष्य के आपसी संबंध मानवीयता के आधार पर होने चाहिए, किसी देश, धर्म, जाति या रंग के आधार पर नहीं।
- मदर टेरेसा, मदर मार्गरेट व सिस्टर क्रिस्ट हैल्ड का समर्पण एवं सेवा-भाव समानुभूति का अद्‍भुत उदाहरण है।
- हम विश्व में कहीं भी रहकर रचनात्मक और मानवीय कार्य कर सकते हैं।

- निःस्वार्थ भाव से सदैव कर्मरत रहने की प्रेरणा मिलती है।
- पाठ की भाषा तत्समनिष्ठ होते हुए भी बोधगम्य है। कहीं-कहीं पर अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया गया है।
- रिपोर्ताज किसी सच्ची घटना पर आधारित सामान्यतः समाचार पत्र के लिए लिखी जाने वाली विधा है।

योग्यता-विस्तार

इस पाठ के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' हैं। इनका जन्म सन 1906 में हुआ था। परिवार में अशांति के कारण उनकी प्रारंभिक शिक्षा सुचारू रूप से नहीं हो पाई। उन्होंने स्वाध्याय से ही हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने वाले 'प्रभाकर' जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की। उन्होंने हिंदी में लघुकथा, संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज जैसी अनेक विधाओं में रचना की। अन्याय के विरुद्ध क्रोध और पीड़ित मानवता के प्रति सहृदयता और करुणा इनकी समस्त रचनाओं में दिखाई पड़ती है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—'माटी हो गई सोना', 'धरती के फूल', 'आकाश तारे', 'जिंदगी मुसकाए', 'भूले-बिसरे चेहरे', 'क्षण बोले कण मुसकाए', 'महके आँगन चहके द्वार।'

'प्रभाकर' जी की भाषा में व्यंग्यात्मक सरलता, मार्मिकता, चुटीलापन, भावाभिव्यक्ति की अद्भुत क्षमता है। भाषा और शैली की अद्वितीयता के कारण गद्यकारों में प्रभाकर जी का विशिष्ट स्थान है।

पाठांत प्रश्न

1. रॉबर्ट नर्सिंग होम में जाना लेखक के लिए क्यों यादगार बन गया? अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
2. रॉबर्ट नर्सिंग होम के डॉक्टर ने कहा, 'मदर तुम हँसी बिखेरती जो हो।' आशय स्पष्ट कीजिए।
3. लेखक मदर टेरेसा के जाने के बाद किस प्रकार की दीवारों के बारे में सोचता रहा? आपकी दृष्टि में इन दीवारों को गिराना क्यों ज़रूरी है?
4. मदर मार्गरेट का जादू किसे कहा गया है? स्पष्ट कीजिए।
5. 'फ़ोटो किसी बात को अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करती है।' आप इस विचार से कहाँ तक सहमत हैं? स्पष्ट कीजिए।

6. 'रॉबर्ट नर्सिंग होम' पाठ से हम अपने जीवन में क्या प्रेरणा ले सकते हैं, उल्लेख कीजिए।

7. निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए:-

   (क) उभरती तरुणाई से उम्र के इस ढलाव तक रोगियों की सेवा में तल्लीन, यही काम, यही धाम, यही राग, यही चाव और बस यही, यही।

   (ख) फ्रांस की पुत्री मदर टेरेसा और जर्मनी की दुहिता क्रिस्ट हैल्ड एक साथ, एक रूप, एक ध्येय, एक रस।

   (ग) कष्ट क्या पात्र की क्षमता देखकर आता है?

   (घ) भाषा के भेद रहे हैं, रहेंगे भी, पर यह जोत विश्व की सर्वोत्तम जोत है।

   (ङ) हम भारतवासी गीता को कंठ में रखकर धनी हुए, पर तुम उसे जीवन में ले कृतार्थ हुईं।

8. यदि मदर टेरेसा और क्रिस हैल्ड एक होकर कार्य न करतीं तो किसकी हानि होती और क्यों, उल्लेख कीजिए।

9. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:-

परोपकार मानव जीवन का धर्म है। परोपकार की भावना के बिना मनुष्य और पशु में किंचित् अंतर नहीं है। परोपकार करने से आत्मा को जिस सच्चे आनंद की प्राप्ति होती है, उसको शब्दों में नहीं बाँधा जा सकता। स्वयं भूखे-प्यासे रहकर किसी की भूख-प्यास को मिटाने से असीम आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है। परोपकार में ही जीवन की सार्थकता है। अपने जीवन को सफल बनाने के लिए हमें अपनी समस्त शक्तियों का प्रयोग परोपकार के लिए करना चाहिए। हमें अपनी धन-संपदा का प्रयोग दूसरों का हित-संपादन करने के लिए, अपनी शक्ति का प्रयोग अत्याचार तथा अन्याय के निवारण के लिए तथा अपनी बुद्धि का प्रयोग अज्ञान के अंधकार को दूर करने के लिए करना चाहिए। यदि जीवन में आप पुण्यशील बनकर पुण्य प्राप्त करने के इच्छुक हैं तो परोपकार कीजिए और यदि पापों का संचय करना चाहते हैं तो दूसरे प्राणियों को पीड़ा दीजिए। अतः हमें परोपकार की पवित्र भावना से प्रेरित होकर जहाँ तक संभव हो सके, दूसरों के कष्टों का निवारण करना चाहिए, क्योंकि जीवन में आनंद की प्राप्ति का यह एक सहज मार्ग है।

1. मनुष्य व पशु के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।
2. हम आत्मिक आनंद की प्राप्ति किस प्रकार कर सकते हैं?
3. हमें अपनी शक्ति व धन का प्रयोग कैसे करना चाहिए?
4. इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए और एक उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए।

उत्तरमाला

बोध प्रश्न

1. (घ) 2. (ग) 3. (घ)

पाठगत प्रश्न

5.1 1. (घ) 2. (ग) 3. (घ)

5.2 1. (ग) 2. (ग) 3. (ख)